



2. यद्धविष्यो विनश्यति



संस्कृत में पंचतंत्र और हितोपदेश ये प्राणी कथा पर आधारित प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनमें प्राणियों को पात्र के रूप में लेकर मानवजीवन में उपयोगी चतुराई का बोध सरल और सहज तरीके से दिया गया है। आबाल वृद्ध सभी को इन कथाओं को सुनना अच्छा लगता है। रस की अनुभूति होने से कथा में दिए गए उपदेश सहज और सरल हो जाते हैं, जिससे कथा बोझ समान नहीं लगती है।

यह पाठ पंचतंत्र और हितोपदेश दोनों ग्रन्थों के आधार पर तैयार किया गया है। पंचतंत्र के रचयिता विष्णुशर्मा हैं। उन्होंने मित्रभेद, मित्रसंप्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश और अपरीक्षितकारक इस तरह कुल पाँच विभागों में पंचतंत्र की रचना की है। उसके प्रथम विभाग मित्रभेद में यह कथा है। हितोपदेश के रचयिता नारायण पंडित हैं। हितोपदेश में मित्रलाभ, सुहृद्भेद, विग्रह और संधि कुल चार विभाग हैं। संधि नामक चौथे विभाग में यह कथा है।

प्रस्तुत पाठ में अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति और यद्धविष्य कुल तीन नर-मछलियों की कथा है। मछुआरों से बचने के लिए अनागतविधाता दूसरे सरोवर में चला जाता है। प्रत्युत्पन्नमति जाल में फँस जाता है और अपनी शीघ्रबुद्धि से मार्ग ढूँढ़कर अपनी रक्षा करता है। यद्धविष्य नामक तीसरा नर-मत्स्य 'जब आयेगा तब देखा जायेगा' ऐसा सोचकर स्वयं को भविष्य पर छोड़ देता है और विनाश को आमंत्रित करता है। तीनों मछलियों के नाम अपने-अपने स्वभाव का निर्देश करते हैं।

भविष्य में आनेवाली समस्याओं का समाधान व्यक्ति को पहले से ही सोचना चाहिए अथवा जब समस्या आ जाए तब अपनी बुद्धि का प्रयोग करके उन समस्याओं से बचकर निकलने का मार्ग ढूँढ़ लेना चाहिए। मात्र किस्मत के भरोसे बैठे रहनेवाले आलसी और निरुद्यमी व्यक्ति की दशा यद्धविष्य के समान होती है।

पुरा एकस्मिन् जलाशये अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमतिः यद्धविष्यश्चेति त्रयो मत्स्याः वसन्ति स्म। अथ कदाचित् तं जलाशयं दृष्ट्वा धीवरैः उक्तम् – “अहो बहुमत्स्योऽयं हृदः। कदाचिद् अपि न अस्माभिः अन्वेषितः। तदद्य आहारवृत्तिः सज्जाता। श्वः अत्रागम्य मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः इति निश्चयः।”



अथ तेषां तत्कुलिशोपमं वचनं समाकर्ण्य मत्स्याः परस्परं प्राहुः - “श्रुतोऽयं धीवरालापः। अधुना अस्माभिः किं कर्तव्यम्।” तत्र अनागतविधाता नाम मत्स्यः प्राह - “नूनं प्रभातसमये धीवराः अत्रागम्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति इति मम मनसि वर्तते। तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमपि अत्र अवस्थातुम्। अस्माभिः रात्रौ एव किञ्चित् समीपं सरः गन्तव्यम्। अहं तावत् जलाशयान्तरं गच्छामि।”

अपरः प्रत्युत्पन्नमतिः प्राह - “भविष्यदर्थे प्रमाणाभावात् कुत्र मया गन्तव्यम्। तदुत्पन्ने यथाकार्यं तदनुष्ठेयम्। तथा चोक्तम् - उत्पन्नामापदं यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान्।”

ततो यद्भविष्येण उक्तम् - “धीवराणां वचनमात्रेण पितृपैतामहिकस्य जलाशयस्य त्यागः न युज्यते। यदि आयुःक्षयोऽस्ति तदा अन्यत्र गतानामपि मृत्युः भविष्यति एव। उक्तं च -

यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा।

इति चिन्ताविषघ्नोऽयमगदः किं न पीयते ॥”

अथ तयोः निश्चयं ज्ञात्वा अनागतविधाता निष्क्रान्तः सह परिजनेन। द्वौ इमौ तत्रैव जलाशये स्थितौ। अपरेद्युः धीवरैः आगत्य जलाशये जालं क्षिप्तम्। जालेन बद्धः प्रत्युत्पन्नमतिः मृतवद् आत्मानं संदर्श्य स्थितः। ततो जालाद् अपसारितः यथाशक्ति उत्प्लुत्य गम्भीरं नीरं प्रविष्टः। यद्भविष्यः धीवरैः प्राप्तः व्यापादितः च। अत एवोक्तम् -

अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा।

द्वावेतौ सुखमेधेते यद्भविष्यो विनश्यति ॥

टिप्पणी

संज्ञा : (पुल्लिङ्ग) **जलाशयः** तालाब, सरोवर **अनागतविधाता** एक मत्स्य का नाम (इस शब्द का अर्थ है - जो आया नहीं है, उसका अनुमान करने वाला, आपत्ति आने से पूर्व उसके बचने का उपाय करना) **प्रत्युत्पन्नमतिः** एक मत्स्य (मछली) का नाम (इस शब्द का अर्थ - प्रत्युत्पन्न अर्थात् हाजिर जवाब, जिसकी बुद्धि तत्काल-त्वरित निर्णय लेने में समर्थ है, वह) **यद्भविष्यः** एक मत्स्य (नर मछली) का नाम (इस शब्द का अर्थ है - जो होना है वो हो इस विचारधारा से सम्पन्न, ऐसा विचार करनेवाला) **मत्स्यः** नर मछली **धीवरः** मछुआरा **आलापः** संवाद, बातचीत **हृदः** तालाब, सरोवर **मृत्युः** मृत्यु, मरण (संस्कृत में पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होता है) **अगदः** औषधि **परिजनः** परिजन, स्वजन **कुलिशः** वज्र, इन्द्र के एक हथियार का नाम।

(स्त्रीलिङ्ग) : **आहारवृत्तिः** खुराक, आहार

(नपुंसकलिङ्ग) : **जालम्** जाल, मछली पकड़ने के लिए पानी में डाली जाने वाली जाली **नीरम्** पानी, जल

सर्वनाम : **एकस्मिन्** (पु.) एक (एक में) **तम्** (पु.) उसे **अस्माभिः** (पु.-नपुं.) हमारे द्वारा, हमसे **तेषाम्** (पु.-नपुं.) उनका, उन सभी का **मम** मेरा **अपरः** दूसरा **मया** मुझसे, मेरे द्वारा **यः** (पु.) जो **सः** (पु.) वह, वो **तयोः** (पु.-नपुं.) उन सभी का, उनका **इमौ** (पु.) ये दोनों, ये दो **एतौ** (पु.) ये दोनों, ये दो

विशेषण : **बहुमत्स्यः** **अयम्** (**हृदः**) ढेर सारी मछलियों से भरा हुआ (तालाब, सरोवर) **कुलिशोपमम्** (**वचनम्**) कुलिश-वज्र (इन्द्र का नुकीला हथियार, पर्वत को भी तोड़ने में समर्थ ऐसा उग्र) की उपमा दी जा सके ऐसे (वचन) **पितृपैतामहिकः** (**जलाशयः**) पूर्वजों से सम्बन्धित (तालाब), पैतृक, वारसागत उपयोग के लिए प्राप्त, (तालाब) **गम्भीरम्** (**नीरम्**) गहरा (पानी)

अव्यय : **पुरा** पहले, आगे **अथ** अब (आरम्भ के अर्थ में प्रयोग किया जाने वाला शब्द) **अद्य** आज **श्च** आने वाला कल **अधुना** अभी **मृतवत्** मरे हुए के समान **यथाशक्ति** शक्ति के अनुसार **अत एव** इसलिए

कृदन्त : (सं.भू.कृ.) दृष्ट्वा देखकर **समाकर्ण्य** सुनकर **ज्ञात्वा** जानकर **आगम्य** आकर **संदर्श्य** दिखाकर **उत्प्लुत्य** कूदकर (**विध्यर्थ कृदन्त**) **व्यापादयितव्याः** मारना चाहिए, मारने योग्य **कर्तव्यम्** करने जैसा, करने योग्य, करना चाहिए **गन्तव्यम्** जाने योग्य, जाना चाहिए **अनुष्ठेयम्** अनुष्ठान करने योग्य, अनुष्ठान करना चाहिए (**हेत्वर्थ कृदन्त**) **अवस्थातुम्** खड़े होने के लिए, टिके रहने के लिए, स्थिर रहने के लिए (**कर्मणि भू. कृ.) उक्तम्** कहा, कहा गया **अन्वेषितः** ढूँढ़ा, ढूँढ़ा हुआ, खोजा हुआ **सञ्जाता** जन्म लिया, उत्पन्न हुई **निष्क्रान्तः** निकल गए, बाहर चले गए **स्थितौ** (दो लोग) खड़े रहे **क्षिप्तम्** फेंका, फेंका हुआ **बद्ध** बँधा हुआ **अपसारितः** दूर (खिसकाना) सरकाना, (दूर किया) दूर हटाया **प्रविष्टः** प्रवेश किया

समासः अनागतविधाता (न आगतम् – अनागतम्, नञ् तत्पुरुष), अनागतस्य विधाता – षष्ठी तत्पुरुष) । प्रत्युत्पन्नमतिः (प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः – बहुव्रीहि) । बहुमतस्यः (बहवः मत्स्याः यस्मिन् सः – बहुव्रीहि) । आहारवृत्तिः (आहारस्य वृत्तिः – षष्ठी तत्पुरुष) । कुलिशोपमम् (कुलिशस्य उपमा यस्य सः, बहुव्रीहि) । धीवरालापः (धीवराणाम् आलापः – षष्ठी तत्पुरुष) । प्रभातसमये (प्रभातस्य समयः, तस्मिन् – षष्ठी तत्पुरुष) । मत्स्यसंक्षयम् (मत्स्यानां संक्षयः, तम् – षष्ठी तत्पुरुष) । जलाशयान्तरम् (अन्यः जलाशयः – जलाशयान्तरम्, कर्मधारय) । (प्रमाणाभावात् (प्रमाणानाम् अभावः, तस्मात् – षष्ठी तत्पुरुष) । आयुःक्षयः (आयुषः क्षयः – षष्ठी तत्पुरुष) ।

[**सूचना :** इस पुस्तक में दिए गए सामासिक पदों (समास) का विग्रह मात्र अध्यापन की सरलता के लिए हैं ।]

क्रियापद : **प्रथम गण (परस्मैपदी) वस्** रहना बसना, निवास करना (**वसति**) **गम् > गच्छ्** जाना (**गच्छति**) (आत्मनेपदी) **वृत्** होना (**वर्तते**) **एध्** बढ़ना, वृद्धि प्राप्त करना (**एधते**)

विशेष

1. शब्दार्थ : **अस्माभिः अन्वेषितः** हमने ढूँढ़ लिया **आहारवृत्तिः सञ्जाता** खाने जितनी व्यवस्था हो गई है, भोजन ग्रहण करने योग्य व्यवस्था हो गई है **धीवरालापः** मछुआरों की बात-चीत **मत्स्यसंक्षयम्** नर मछलियों का विनाश **करिष्यन्ति इति मम मनसि वर्तते** (वे लोग) करेंगे ऐसा मेरे मन में है **तत् न युक्तम्** वह उचित नहीं है, वह योग्य नहीं है **साम्प्रतम्** अभी, तुरन्त **जलाशयान्तरम्** दूसरे तालाब की ओर **भविष्यदर्थे** भविष्य के लिए, आगामी समय के लिए **प्रमाणाभावात्** प्रमाण का अभाव होने से, शिनाख्त न होने से **यथाकार्यम्** कार्य के अनुसार, कार्यान्तरूप **उत्पन्नम् आपदम्** उत्पन्न हुई आपत्ति से, उत्पन्न हुई आपदा से **समाधत्ते** समाधान करते हैं **चिन्ताविषघ्नः** चिन्ता रूपी विष से मृत, चिन्ता के कारण मरा हुआ **किम् न पीयते** क्यों नहीं पिया जाता है, क्यों नहीं पीते

2. सन्धि : यद्धविष्येति (यद्धविष्यः च इति) । त्रयो मत्स्याः (त्रयः मत्स्याः) । बहुमत्स्योऽयं ह्रदः (बहुमत्स्यः अयम् ह्रदः) । अत्रागम्य (अत्र आगम्य) । मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः (मत्स्यकूर्मादयः व्यापादयितव्याः) । श्रुतोऽयम् (श्रुतः अयम्) । अत्रागम्य (अत्र आगम्य) । तन्न युक्तम् (तत् न युक्तम्) । चोक्तम् (च उक्तम्) । यस्तु (यः तु) । आयुःक्षयोऽस्ति (आयुःक्षयः अस्ति) । चिन्ताविषघ्नोऽयमगदः (चिन्ताविषघ्नः अयम् अगदः) । तत्रैव (तत्र एव) । ततो जालात् (ततः जालात्) । अत एवोक्तम् (अतः एव उक्तम्) । द्वावेतौ (द्वौ एतौ) । यद्धविष्यो विनश्यति (यद्धविष्यः विनश्यति) ।

स्वाध्याय

1. अधोलिखितेभ्यः विकल्पेभ्यः समुचितम् उत्तरं चिनुत ।

- (1) धीवराणां वचनं कीदृशम् आसीत् ? ☐
- (क) विषोपमम् (ख) अनलोपमम् (ग) कुलिशोपमम् (घ) कृतान्तोपमम्
- (2) अन्यं जलाशयं गन्तुं कः मत्स्यः निश्चयं करोति ? ☐
- (क) सर्वे (ख) अनागतविधाता (ग) यद्भविष्यः (घ) प्रत्युत्पन्नमतिः
- (3) धीवरैः उक्तम्, अद्य अस्माकं वृत्तिः । ☐
- (क) सञ्जाता (ख) सञ्जातः (ग) सञ्जातिः (घ) सञ्जातम्
- (4) अनागतविधाता सह निष्क्रान्तः। ☐
- (क) परिजनम् (ख) परिजनाय (ग) परिजनस्य (घ) परिजनेन
- (5) प्रत्युत्पन्नमतिः प्राह, भविष्यदर्थे प्रमाणाभावात् कुत्र मया । ☐
- (क) गन्तुम् (ख) गतम् (ग) गन्तव्यम् (घ) गतः
- (6) अनागतविधाता प्राह, अत्र क्षणमपि न युक्तम्। ☐
- (क) अवस्थातुम् (ख) अवस्थितः (ग) गन्तुम् (घ) अवगम्य

2. एकवाक्येन संस्कृतभाषाया उत्तरत ।

- (1) जलाशये के त्रयः मत्स्याः वसन्ति स्म ?
- (2) अपरेद्युः धीवरैः जलाशये किं क्षिप्तम् ?
- (3) कौ द्वौ मत्स्यौ जलाशये एव स्थितौ ?
- (4) जलात् अपसारितः प्रत्युत्पन्नमतिः कीदृशं नीरं प्रविष्टः ?
- (5) कः मत्स्यः धीवरैः व्यापादितः ?

3. अधोलिखितानां कृदन्तानां प्रकारं लिखत ।

- | | | | |
|----------------|-------|----------------|-------|
| (1) सञ्जाता | | (2) अनुष्ठेयम् | |
| (3) समाकर्ण्य | | (4) बद्धः | |
| (5) अवस्थातुम् | | (6) गन्तव्यम् | |

4. समासप्रकारं लिखत ।

- | | | | |
|--------------------|-------|------------------------|-------|
| (1) जलाशयान्तरम्। | | (2) बहुमत्स्यः। | |
| (3) धीवरालापः। | | (4) प्रत्युत्पन्नमतिः। | |
| (5) प्रमाणाभावात्। | | | |

5. सन्धिविच्छेदं कुरुत ।

- (1) यद्भविष्यश्चेति।
(2) श्रुतोऽयम्
(3) प्रत्युत्पन्नमतिस्तथा

6. रेखाङ्कितानां पदानां स्थाने प्रकोष्ठात् उचितं पदं चित्वा प्रश्नवाक्यं रचयत ।

(कदा, कस्मात्, कीदृशः, केन, कः)

- (1) बहुमत्स्यः अयं हृदः।
- (2) अस्माभिः रात्रौ एव समीपं सरः गन्तव्यम्।
- (3) अनागतविधाता परिजनेन सह निष्क्रान्तः।
- (4) प्रत्युत्पन्नमतिः जालात् अपसारितः।
- (5) धीवरैः यद्भविष्यः व्यापादितः।

7. कथायाः क्रमानुसारेण वाक्यानि लिखत ।

- (1) अहं तावज्जलाशयान्तरं गच्छामि।
- (2) पितृपैतामहिकस्य जलाशयस्य त्यागः न युज्यते।
- (3) प्रमाणाभावात् कुत्र मया गन्तव्यम्।
- (4) श्वः अत्र आगम्य मत्स्यकूर्मादयो व्यापादयितव्याः।
- (5) धीवरैः जलाशये जालं क्षिप्तम्।
- (6) यद्भविष्यः धीवरैः प्राप्तः व्यापादितः च।

8. मातृभाषायाम् उत्तरत ।

- (1) सरोवर देखकर मछुआरों ने क्या सोचा ?
- (2) मछुआरों की बातचीत सुनकर नर मछलियों ने परस्पर क्या कहा ?
- (3) अनागत विधाता ने अपने किस विचार (मत) को व्यक्त किया ?
- (4) प्रत्युत्पन्नमति अन्य जलाशय में क्यों नहीं गया ?
- (5) सरोवर छोड़ने के विषय में यद्भविष्य का क्या मानना है ?
- (6) इस कथा से क्या सीख मिलती है ?

9. पात्रैः सह यथास्वम् उक्तिं संयोजयत ।

क

- (1) धीवराः
- (2) अनागतविधाता
- (3) यद्भविष्यः
- (4) प्रत्युत्पन्नमतिः

ख

- (1) तदुत्पन्ने यथाकार्यं तदनुष्ठेयम्।
- (2) श्रुतोऽयं धीवरालापः ?
- (3) अहो बहुमत्स्योऽयं हृदः।
- (4) यदभावि न तद्भावि।
- (5) तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमपि अत्र अवस्थातुम्।

प्रवृत्ति

- पंचतंत्र और हितोपदेश की अन्य कथाओं को पढ़िए।
- आने वाले संकट से बचने के उपाय से संबंधित अन्य भाषा की सूक्तियाँ एकत्रित कीजिए।
- इन्टरनेट के माध्यम से पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाओं पर आधारित चित्रों को देखें तथा एकत्र करें।